नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में नारी पात्रों की युगीन सार्थकता

–निशान्त सिंह एवं डॉ. चन्द्रेश्वर पाण्डेय*
शोधछात्र–सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, सिद्धार्थनगर
*एसो.प्रोफे. एवं अध्यक्ष : हिन्दी विभाग
एम.एल.के. पी.जी. कॉलेज, बलरामपुर

भारतीय समाज में नारी को देवी अर्द्धांगिनी, भार्या, सहधर्मिणी, गृहलक्ष्मी, रानी, पटरानी आदि अनेक विशेषणों से सुसज्जित किया है। भारतीय समाज में पत्नी का बड़ा ही उच्च तथा आदर्श स्थान है। वेदों, पुराणों में पत्नी को गृहसाम्राज्ञी कहा गया है। किन्तु वर्तमान में नारी या पत्नी की वास्तविक स्थिति इससे भिन्न है। नारी को युगों से ही दासी रूप में रखा जाता रहा है। गृहसाम्राज्ञी तथा गृहलक्ष्मी का रूप तो बहुत कम को मिलता है; विशेषकर 'महाभारतकाल' में। आधुनिक युग में समाज सुधारकों का ही नहीं साहित्यकारों का भी ध्यान इस ओर गया है कि समाज में नारी की वास्तविक स्थिति क्या है और क्या होनी चाहिए। युग–युग से पीड़ित व प्रताड़ित नारी–जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण 'महासमर' के लेखक नरेन्द्र कोहली ने बड़ी संवेदनशीलता से किया है।

'महासमर' में लेखक नरेन्द्र कोहली ने नारी पात्रों की युगीन सार्थकता तथा प्रासंगिकता को उनके चारित्रिक विकास के साथ–साथ उद्घाटित किया है। प्रकृति के नियम जहाँ अटल, अपरिवर्तनशील एवं शाश्वत हैं, वहाँ जीवन का प्रवाह, इसके नियम, परम्पराएँ, मूल्य बोध, मान्यताएँ सभी परिवर्तनशील एवं गतिमान हैं। अतीत की मान्यताओं एवं परम्पराओं का हमारे बीच कोई स्थान नहीं है। अपितु वर्तमान की आधारशिला ही विगत है। समाज की इसी महती आवश्यकता का अनुभव कर कुछ लेखकों ने समसमायिकता को वर्तमान प्रसगों एवं पात्रों के माध्यम से उठाया है।

'महासमर' के लेखक ने सत्यवती के चारित्रिक विकास में नारी मन के अनेक पक्षों को उद्घाटित किया है। एक ओर तो वह स्वयं पुरूष प्रधान समाज द्वारा पीड़ित दिखाई देती है तो दूसरी ओर वह अपनी पुत्रवधुओं पर एक नारी की तरह नहीं एक पुरूष की तरह शासन करती दिखाई देती है। आधुनिक सन्दर्भ में सत्यवती की प्रासंगिकता इसमें है कि वह उन स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है जो भविष्य को लेकर अपने मन में एक चित्र बनाती हैं। वास्तव में सभी स्त्रियाँ ऐसा करती भी हैं। दूसरे, ससुराल में मिलने वाले सुख–वैभव का भी वह सपना देखती हैं, तीसरे वह उन स्त्रियों के रूप में भी प्रासंगिक है, जो जिद्दी है, स्वार्थी हैं जो अपने सपनों को पूरा करने के लिए किसी भी हद तक जा सकती हैं। अम्बा का विरोध एकदम आधुनिक नारी का विरोध लगता है।

वर्तमान नारी विमर्श दौर में या बढ़ती नारी शिक्षा और जागरूकता के प्रति चयन में नारी का विरोध बढ़ गया है। अर्थात् माता–पिता या अन्य कोई उन पर अपना निर्णय थोप नहीं सकता। अतः इस रूप में अम्बा का चरित्र सार्थक एवं प्रासंगिक है। अम्बिका और अम्बालिका का विवाह विचित्रवीर्य से कर दिया जाता है। रोगी विचित्रवीर्य का असामायिक निधन हो जाता है,

इनके सामने आज की नारी के समान अस्तित्व की चुनौती खड़ी होती है, भले ही, वर्तमान समाज को हम आधुनिक कहें किन्तु आज भी समाज में अनेक अम्बिका और अम्बालिका हैं जिनका विवाह उनसे बिना पूछे ही कर दिया जाता है और सन्तानोत्पत्ति का साधन माना जाता है। इसी रूप में अम्बिका और अम्बालिका की युगीन सार्थकता और प्रासंगिकता सिद्ध होती है।

अम्बिका नारी की पीड़ा को व्यक्त करती हुई कहती है कि, ''अम्बालिके! मैं ठीक कह रही हूँ। हम राजमाता के लिए किसी उपयोग की वस्तु हैं, तो हमें सहेजकर रखेंगी और यदि हमारा कोई उपयोग नहीं है तो फिर कदाचित् हमें सती होने का आदेश मिल जायेगा।''[1] यह नारी जीवन की विवशता ही थी। वर्तमान में भी अनेक स्त्रियाँ इसी विवशता की शिकार हैं। आज भी नारी को संतान उत्पन्न करने की मशीन समझा जाता है, अगर वह इस कार्य में सक्षम नहीं है तो तलाक तक भी दे दिया जाता है। आधुनिक समाज में भी स्त्री को बहुत से लोग यूज एण्ड थ्रो के दृष्टिकोण से देखते हैं। सत्यवती भी अम्बिका और अम्बालिका से वंश चलाने के लिए इस्तेमाल करती है, उसे तो संतान चाहिए भले ही वह नियोग से अर्थात् अन्य पुरूष से करे। अम्बिका और अम्बालिका यह करती भी हैं। इसी रूप में उनकी सार्थकता और प्रासंगिकता है।

तद्युगीन समाज में अपंग पुत्र पैदा होने पर नारी को ही दोषी माना जाता था और दोष देने वाली भी नारी होती थी। आज भी गाँव में देखिए वहाँ भी नारी की यही स्थिति दिखाई देती है। वर्तमान समाज में भी स्त्री की स्थिति में अधिक अन्तर नहीं आया है। अगर वह पुत्र पैदा नहीं करती तो उसे ही दोषी माना जाता है, अगर बच्चा अपंग होता है तो उसी पर दोष मढ़ा जाता है। समाज के इस रूप के उद्घाटन के लिए भी अम्बिका और अम्बालिका का चरित्र प्रासंगिक है।

नरेन्द्र कोहली जी नारी की पीड़ादायक स्थिति को आधुनिकता के साथ व्यक्त करते हैं– ''यदि पाण्डु का मन माद्री से ऊब भी गया तो वह तीसरा विवाह करेगा, लौटकर कुन्ती के पास क्यों आयेगा। यदि दूसरा विवाह करते हुए उससे किसी ने कुछ नहीं पूछा तो, तीसरा विवाह करने पर भी कौन पूछेगा।''[2] पुरुष एकाधिक विवाह कर सकता था, आज भी कर सकता है। वर्तमान समाज में एक पंथ या समूह या मजहब ऐसा है जिसके पुरुष तीन–चार विवाह वैधानिक तौर से कर लेते हैं किन्तु स्त्री को अधिकार नहीं है। दूसरे धर्मों, समूहों से जुड़े लोग भी एकाधिक विवाह कर लेते हैं, कुछ तलाक देकर कर लेते हैं, यहीं नहीं कुछ तो धर्म परिवर्तन कर विवाह कर लेते हैं। ऐसी स्थिति में पहली पत्नी की क्या स्थिति होगी, वही स्थिति कुन्ती की भी रही होगी। अतः इस रूप में भी कुन्ती का चरित्र आधुनिक रूप में प्रासंगिक है।

माद्री की सार्थकता बताते हुए कोहली ने माद्री से कहलवाया है, ''मैं रति–सुख विहीन गार्हस्थ्य जीवन की इच्छुक नहीं हूँ। .... मैं पुंसत्वहीन पति पाण्डु के साथ नहीं रहना चाहती।''[3] इस प्रकार माद्री कुन्ती के सामने अपने पुंसत्वहीन पति पाण्डु को त्यागने की बात कहकर नारी के रूप में अपने स्वाभिमान को प्रकट करती है। वर्तमान आधुनिक समाज में भी स्त्री ससुराल पक्ष का कुछ हद तक अत्याचार सहन कर लेती है। पति के पुंसत्वहीन को स्वीकार नहीं करेगी, वह माद्री की तरह विरोध करेगी। इसी रूप में माद्री का चरित्र युगीन सार्थकता तथा प्रासंगिकता लिए हुए है।

नरेन्द्र कोहली ने तद्युगीन रानियों की विवशता एवं दयनीयता का जीवन्त चित्र अंकित किया है। आधुनिक युग में भी स्त्री का अपहरण कर होटलों में यौन सुख तृप्ति के लिए दलालों को बेच दिया जाता है, स्थिति जितनी विकराल है उतनी भयंकर भी है, इसी रूप में प्रासंगिक भी है। द्रौपदी का चरित्र महाभारत में ही नहीं, अनेक दृष्टियों से विश्व–साहित्य में भी अद्भुत है। ऐसा पात्र जिसके लिए पूरे विश्वास के साथ 'न भूतो न भविष्यति' कहा जा सकता है। द्रौपदी का चरित्र महाभारत के अन्य पात्रों के समान न अंकुरित हुआ है, न विकसित; वह तो प्रतिष्ठित हुआ है। द्रौपदी का जन्म यज्ञ–कुण्ड में से हुआ था और उस समय वह पूर्ण यौवना थी। व्यास और कुन्ती की उपस्थिति में द्रौपदी का विवाह पाँचों पाण्डवों से होता है। यहाँ नरेन्द्र कोहली जी ने पुरूष प्रधान समाज में स्त्रियों की असहाय स्थिति का अंकन किया। आधुनिक युग में यही स्थिति बनी हुई है। अर्थात् जिस प्रकार से द्रौपदी की इच्छा नहीं पूछी गई कि वह किसके साथ विवाह करेगी, इसी प्रकार वर्तमान समाज में भी स्त्रियों की इच्छा पूछे बिना ही उसका विवाह कर दिया जाता है। आधुनिकता के प्रभाव नारी शिक्षा व जागरूकता के कारण स्थिति में परिवर्तन हो रहा है, फिर भी स्थिति में उतना बदलाव नहीं है जितनी की आवश्यकता है। अतः इस रूप में भी द्रौपदी का चरित्र प्रासंगिक है।

नरेन्द्र कोहली जी कहते हैं कि युधिष्ठिर जैसे धर्मनिष्ठ व्यक्ति भी स्त्री को धन या वस्तु समझते है तथा दुर्योधन और शकुनि जैसे दुष्ट लोग छलकपट द्वारा परस्त्रियों पर अधिकार जमाकर खुश होते थे। इसे तत्कालीन समाज की विकृति ही कहा जायेगा। यही विकृति आधुनिक समाज में भी जैसी की तैसी बनी हुई है, पुरुष आज भी पैसों के खातिर अपनी पत्नी को दाँव पर लगा देता है, अपने बच्चों को बेच देता है। आधुनिक समाज में तो ऐसे–ऐसे समाचार पढ़ने को मिलते हैं कि पैसों के लिए पति अपनी पत्नी से वैश्यावृत्ति करवाते हैं और जरूरत पड़ने पर बच्चों से गलत कार्य भी करवाते हैं। यहाँ तक कि उन्हें बेच भी देता है। आज भी कुछ क्षेत्रों में अपनी पुत्री को चंद सिक्कों की खातिर बेच दिया जाता है। देखा जाए तो युधिष्ठिर द्वारा दाँव पर लगाई दासियों का चरित्र भी प्रासांगिक है।

कर्ण भी द्रौपदी को वेश्या कहता है। आश्चर्य की बात यह है कि पाँच–पाँच पतियों की पत्नी होने के बावजूद भी द्रौपदी निःसहाय थी। और कोई भी महारथी उसका पक्ष लेने का साहस तक नहीं कर पाता है। द्यूत में द्रौपदी को हारने के बाद पाण्डवों को बारह वर्ष का वनवास और एक वर्ष का अज्ञातवास मिलता है। पाण्डव, वनवास, अज्ञातवास तथा द्रौपदी पर हुए अत्याचार को सहन कर लेते हैं, किन्तु विरोध नहीं करते, शक्ति होते हुए भी हथियार नहीं उठाते और विरोधी तथा दुष्ट पक्ष के अत्याचारों का स्तर बढ़ाता रहता है। वर्तमान में भी दुष्ट लोग स्त्री का अपहरण, बलात्कार, यहीं नहीं सामूहिक बलात्कार करते हैं। इस रूप में देखा जाए तो द्रौपदी के साथ कौरवों का चरित्र युगीन परिवेश में प्रासंगिक है।

तद्युगीन समाज में नारी का अपहरण साधारण–सी बात थी। नरेन्द्र कोहली ने इस अनाचार से पीड़ित माता की व्यथा को वाणी दी है – ''अब मेरी फूल–सी बच्ची उस मुच्छड़ के साथ चली गई। बताओ तो क्या होगा अब उसके जीवन का, जाने वह मुच्छड़ है कौन? सम्भव है विवाहित हो, बाल, बच्चो वाला हों। ..... और यह उठकर उसके साथ चल दी, जाने कौन है वह मुआ। हमारी भोली–भाली बच्ची को बहकाकर ले गया। .....''[4] इस प्रकार पुरूष समाज द्वारा नारी का शोषण और अत्याचार एक आम बात थी। आधुनिक समाज में भी नारी पर ऐसे ही

अत्याचार किए जा रहे हैं। स्त्री के बलात्कार केस रोज हमारे सामने आ रहे हैं। अपहरण की घटनाएँ आए दिन बढ़ती जा रही हैं। लड़कियों का अपहरण किया जाता है और बलात्कार कर उनको बेच दिया जाता है। नरेन्द्र कोहली ने इस प्रकार तद्युगीन स्थिति को आधुनिक सन्दर्भ से जोड़ा है।

तद्युगीन समाज हो या आज का समाज कुछ अधिक अन्तर नहीं है। आज भी स्त्री विवाह के बाद मायके में तो न के बराबर ही जाती है। उस पर पुरूष का वर्चस्व बना हुआ है। इस आधुनिक समाज में भी पुरूष की प्रधानता है। स्त्री विवाहोपरान्त पुरूष के ही घर रहती है। आज तक भी ऐसा बदलाव नहीं आया है कि स्त्री की इच्छा है कि वह चाहे तो अपने पति के साथ अपनी माँ के घर रह सके; अतः इस रूप में कुन्ती का कथन तथा चरित्र पूरी प्रासंगिकता के साथ प्रकट हुआ है।

अज्ञातवास के समय अपने पतियों से दूर रहकर द्रौपदी अपनी नारी सहज दुर्बलता का अनुभव करती है। विराट नगर में प्रत्येक सैनिक की नजर से बचना उसके लिए मुश्किल हो जाता है। जब सैनिक उसे पकड़कर रानी सुदेष्णा के पास ले जाते हैं तो वह स्वयं का परिचय एक सौरंध्री के रूप में देती है और रानी के केस सज्जा करके उसे मुग्ध कर देती है। जो उसे अपने पास रखना चाहती है तब सैरन्ध्री अपनी सुरक्षा की बात रानी से कहती है तब रानी विराटनगर की व्यवस्था के बारे में कहती है ''पुरूषों के राज्य में स्त्री सदा इसी प्रकार असुरक्षित रहती है सैरन्ध्री इसके लिए हम क्या कर सकती हैं।''[5] यहाँ नरेन्द्र कोहली ने पुरूष समाज में स्त्रियों की असहाय स्थिति का अंकन किया है। आज भी समाज में पुरूष की प्रधानता बनी हुई है और नारी स्वयं को असुरक्षित पाती है। आज भी रेप, बलात्कार, अपहरण की सामान्य–सी बात लगने लगती है।

नरेन्द्र कोहली ने पुरुष काम–वासना का वर्णन करने के लिए लेखक ने कीचक की घटना को हमारे सामने प्रस्तुत किया है– ''कीचक को और कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। उसे तो बस यही ज्ञान था कि वह पिछले कई दिनों से से सैरन्ध्री को अपनी शैय्या पर लाने के सपने देख रहा था। उसे तो बस अपने सामने खड़ी सैरन्ध्री दिखाई दे रही थी, जिसने उसके उद्दीप्त काम को इस प्रकार बाधित किया था कि उसका हृदय अपनी पीड़ा सहन करने में असमर्थ हो रहा था। ऐसे में वह केवल विनाश कर सकता था।''[6] यहाँ राजपुरूषों द्वारा अपनी सत्ता और बल के दुरुपयोग को कोहली जी ने नाटकी शैली में जीवन्त अभिव्यक्ति दी है। यही स्थिति आधुनिक काल में भी बनी हुई है। नारी को आज भी लोभ–लालच लेकर उसे फँसाया जाता है और फिर उसका शोषण किया जाता है।

वर्तमान युग में स्त्री को कभी नौकरी का लालच देकर कभी प्रमोशन का लालच देकर सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा शोषण करवाया जाता है। शोषण केवल मानसिक ही नहीं शारीरिक भी किया जाता है। इसी स्थिति का सैरन्ध्री और कीचक का प्रकरण उद्घटित करता है और इसलिए यह प्रासंगिक भी है।

तद्युगीन समाज में नारी की सुरक्षा के सम्बन्ध में लोग चिन्तित रहते थे। एकचक्रा नगर में नारी की कोई सुरक्षा नहीं थी। इस सन्दर्भ में सरस्वती कुन्ती से कहती है– ''हाँ! पुत्रियों से घर की शोभा होती है, किन्तु उनका दायित्व और वह भी एकचक्रा जैसी इस नगरी में, हर समय चिन्ता लगती रहती है। लड़की को अकेली न बाहर भेज सको, न घर में छोड़ सको। घर में

छोड़ो तो लोग झाँके, मार्ग पर चलती देखे तो आवाजें कसें। किसी दिन कोई ऊँच–नीच हो जाए तो जीवन–भर माता–पिता अलग रोएँ और लड़की अलग। पुत्री तो वह अग्नि है दीदी जिसे न आँचल की ओट में रख सको, और न निकाल कर मार्ग पर रख फेंक सको।.....''[7] अतः युवा लड़की की उस समय बहुत चिन्ता रहती थी। आज भी वातावरण में कोई अन्तर दिखाई नहीं देता। वर्तमान में भी यही स्थिति है, लड़की न गाँव में, न नगर में और न महानगर में सुरक्षित है। पुलिस, प्रशासन सबकुछ होते हुए भी लड़की घर से निकलते हुए भी डरती है। भले ही वर्तमान समाज को हम आधुनिक कहें पुलिस प्रशासन से युक्त कहें, परन्तु फिर भी स्त्री सुरक्षित नहीं है। हर रोज समाचार पत्रों में पढ़ने को मिलता है कि स्त्रियों का अपहरण हो रहा है, बलात्कार हो रहा है, रेप तथा सामूहिक रेप हो रहा है, तो बताइए ऐसे वातावरण में स्त्री कैसे सुरक्षित महसूस करेगी या उसके घर वाले कैसे चिन्ता न करेंगे? अतः इस रूप में यह प्रमाण प्रसांगिक है। स्त्री क्रय–विक्रय की स्थिति इतनी दयनीय थी कि वह बाहर निकलने में भी असमर्थ थी।

तद्युगीन समाज में राजा अपनी कन्याओं का दान करते हुए उनके विनिमय में शुल्क लेते थे। किन्तु धीरे–धीरे उसमें बदलाव आता गया और क्षत्रिय समाज उसका विरोध करने लगा था और उस समय का प्राचीन विवाह सम्बन्ध व्यवस्था में भी परिवर्तन छाने लगा था। वे अब विवाह के समय वर पक्ष से कुछ न लेते हुए कन्या दान करने लगे थे। यही नरेन्द्र कोहली जी ने सामाजिक मान्यताओं और विचारों के परिवर्तन की ओर इंगित करते हुए कन्या के विवाह और विक्रय में अर्थभेद को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। इस सन्दर्भ को लेखक ने आधुनिक युग से जोड़ा है। आज भी समाज में यही स्थिति बनी हुई है। दहेज–प्रथा बनी हुई है। दहेज के अनुसार विवाह रचा जाता है और दहेज के अनुसार ही नारी का ससुराल में सम्मान होता है। जो स्त्री ससुराल में जितना अधिक दहेज लेकर आएगी उसका उतना अधिक सम्मान होता है। यही नहीं दहेज के नाम पर प्रताड़ित किया जाता है। उस पर जुल्मों का कहर ढाया जाता है, अगर इस आधुनिक कहे जाने वाले समाज में भी स्त्री को दहेज की तराजु में तोला जाए तो 'महासमर' में यौतुक के प्रकरण अप्रासंगिक न कहे जाएगें?

तद्युगीन समाज की विभिन्न प्रथाएँ, रीति–रिवाज और अन्धश्रद्धाएँ, छल–कपट, पाखण्ड, अन्याय जैसी समस्याएँ स्वतंत्र भारत की अनेकानेक समस्याओं में एकाकर होती दिखाई देती है। भारत विभाजन के समय पाकिस्तानियों द्वारा की गई बुद्विजीवियों की सामूहिक हत्याएँ, स्त्रियों पर किए गये बलात्कार तथा स्वातन्त्र्योतर भारत में नेताओं और बदमाशों द्वारा आम जनता का शोषण, उनके द्वारा होते अत्याचार, छल–कपट, पाखण्ड, अन्याय और विभिन्न जातिगत समाजों में व्याप्त सड़ी गली मान्यताओं, रीति–रिवाजों को कोहली जी ने पौराणिक मिथकों द्वारा सुन्दर अभिव्यक्ति प्रदान की है। इसी प्रकार महाभारत युगीन समाज की विभिन्न समस्याओं में वर्तमान भारत की अनेकानेक समस्याओं और विसंगतियों को अपने पात्रों के माध्यम से एकरूप कर अभिव्यक्त करने में कोहली जी सफल सिद्ध हुए हैं और इने पात्र सार्थक सिद्ध हुए हैं।

'महासमर' के नारी पात्रों को यदि हम आधुनिक परिप्रेक्ष्य में देंखे तो कहा जा सकता है कि सत्यवती का चरित्र एक ऐसी आधुनिक नारी के रूप में उभरा है, जो भावी पति से अनेक अपेक्षाएँ रखती हैं, पति के घर में मिलने वाली सुख–सुविधाओं को ध्यान में रखकर ही विवाह करती है। बल्कि वह तो अपनी शर्तों पर विवाह करती है। सुख–भोग की चाहत में जिद्दी और

स्वार्थी भी बन जाती है। गांधारी का चरित्र पति के प्रति पूर्णतः समर्पण के रूप में उभरा है तो कुन्ती का चरित्र संघर्षशील स्त्री के रूप में उभरा है, जो अपने पुत्रों को न्याय एवं अधिकार दिलाने के लिए संघर्षरत है। वर्तमान में अनेक स्त्रियाँ संघर्ष करती देखी जा सकती है। माद्री का चरित्र एक ऐसी स्त्री के रूप में उभरा है जो अपने पति के लिए जीती थी और पति से काम–भोग की तृप्ति भी चाहती थी। यही नहीं अन्ततः वह पति के साथ ही सती भी हो जाती है। माद्री का चरित्र उन आधुनिक स्त्रियों के रूप में उभरा है, जो अपने पति के साथ ही जीना या मरना चाहती हैं। पति के बिना अपना जीवन सार्थक नहीं मानती।

द्रौपदी का चरित्र एक ऐसी आधुनिक स्त्री चरित्र के रूप में उभरा है जो सम्पूर्ण स्त्री जाति का प्रतिनिधित्व करती है, जो सम्पूर्ण पुरुष समाज द्वारा पीड़ित, उस पर हर पुरुष ने अत्याचार किया है केवल प्रभु श्रीकृष्ण को छोड़कर। किसी ने चीरहरण कर तो किसी ने मूकदर्शक बनकर। द्रौपदी आधुनिक स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती है तो स्त्री पर हुए अन्याय और अत्याचार का प्रतिशोध लिए बिना शान्त नहीं होती।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि महासमर में नारी पात्रों की सार्थकता उनकी प्रासंगिकता में है, आज भी नारी के साथ बलात्कार होते हैं, यहाँ तक कि सामूहिक बलात्कार भी होते हैं जिस प्रकार से भरी सभा में युवराजों ने सामूहिक तौर से द्रौपदी का अपमान किया था। उसी प्रकार आज भी दिग्भ्रमित युवा सामूहिक तौर से बलात्कार कर नारी को अपमानित और पीड़ित कर रहे हैं। आज भी समाज में पुरुष की प्रधानता है। उसी प्रधानता की सोच में नारी को उनके अधिकारों से वंचित बनाए रखा है। अन्त में तद्युगीन समाज और आज के समाज में नारी की दशा में कुछ परिवर्तन तो आया है किंतु मूल रूप से पुरुष की मानसिकता में कोई परिवर्तन नहीं देखने को मिलता है। आज भी नारी पुरुष की बर्बरता की राक्षसीपन की शिकार है।

आधुनिक सन्दर्भ में हिडिम्बा का चरित्र नारी मन में निहित प्राकृतिक आवश्यकता काम–भोग तथा पुत्र–प्राप्ति की इच्छा के उकेरने के रूप में प्रयुक्त हुआ है। इस आधुनिक वातावरण में हिडिम्बा की तरह इच्छा रखने वाली स्त्रियाँ भी मिलेगी तथा उसी की तरह पुत्र को पूरी निष्ठा से लालन–पालन करने वाली भी मिल जाएँगी। उलूपी का चरित्र एक स्वच्छन्द स्त्री के रूप में उभरा है। इस आधुनिक युग में पुत्रियाँ अपने पिता की सम्पति की सुरक्षा पुत्र की भाँति ही करती हैं उनके चरित्र को उभारने के लिए चित्रागंदा का चरित्र देखा जा सकता है। आधुनिक स्त्री किसी भी कीमत पर सुन्दर दिखना चाहती है। ऐसी स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करती सुदेष्णा है। एक साधारण तथा गरीब गृहिणी प्रतिनिधित्व करने वाली नारी सरस्वती है। एक स्त्री की विपत्ति में दूसरी स्त्री किस प्रकार से आज भी सहयोग करती है यह पारसंवी में देखा जा सकता है। सुभद्रा, देविका, बलंधरा, करेणुमती आदि का चरित्र वर्तमान सन्दर्भ में देवरानी के रूप में देखा जा सकता है। वर्तमान में कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी हैं जो न्याय–अन्याय का विचार किए बिना ही अपने मायके का पक्ष लेती हैं और पक्ष लेने के लिए पति पर भी दबाव बनाती हैं। ऐसी स्त्रियों का प्रतिनिधित्व लक्ष्मणा करती दिखाई देती हैं कृपी का चरित्र एक ऐसी स्त्री के रूप में उभरा है जो दो विद्वानों के बीच सेतु का कार्य करती है।

निस्संकोच यह कहा जा सकता है कि आधुनिक युग में नारी चरित्र के जितने भी कोण हो सकते हैं, उसकी जिस प्रकार की आकाक्षाएँ हो सकती हैं, उसका जो समाज में संघर्ष हो

सकता है, उन सब रूपों, चरित्रों का उद्घाटन 'महासमर' के नारी पात्रों सत्यवती, अम्बा, अम्बालिका, अम्बिका, गांधारी, कुन्ती, द्रौपदी, हिडिम्बा, सुभद्रा, उलूपी, चित्रांगदा, देविका, बलंधरा, करेणुमती, यशोदा, देवकी, रोहिणी, सत्यभामा, विजया, वृषाली, दुःशाला, लक्ष्मणमा, रूकमणी, पारसंवी, कृपी, जांबवती आदि के द्वारा किया गया है।

अतः नरेन्द्र कोहली के उपन्यासों में युगीन सार्थकता देखते ही बनती है और वो अपनी इस दक्षता में सफल भी हुए हैं। कोहली जी ने प्रमुख घटनाओं, प्रसंगों एवं पात्रों को नवीन आलोक में प्रस्तुत किया है। कोहली जी के पात्रों का मनोविज्ञान तत्कालीन राजनीतिक दुरावस्था, वैयक्तिक लोभ, मोह, क्रोध, अहंकार, काम, तृष्णा आदि उस समय की ही नहीं आज की भी समस्याएँ हैं। इन समस्याओं को कोहली जी ने अपने नारी पात्रों के द्वारा उभारा है और कोहली जी की नारी पात्र सार्थक सिद्ध हुए हैं। आज की नारी भी इन समस्याओं से जूझ रही है।

सन्दर्भ सूची–

1. नरेन्द्र कोहली; महासमर खण्ड–1; बन्धन; पृ० 226
2. नरेन्द्र कोहली; महासमर खण्ड–1; बन्धन; पृ० 366
3. नरेन्द्र कोहली; महासमर खण्ड–1; बन्धन; पृ० 398
4. नरेन्द्र कोहली; महासमर खण्ड–6; प्रच्छन्न; पृ० 60
5. नरेन्द्र कोहली; महासमर खण्ड–6; प्रच्छन्न; पृ० 394
6. नरेन्द्र कोहली; महासमर खण्ड–6; प्रच्छन्न; पृ० 456
7. नरेन्द्र कोहली; महासमर खण्ड–3; कर्म; पृ० 233